International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 1057-1059

ग्रामीण पारिवारिक संरचना पर मोबाइल फोन का प्रभावः एक समाजषास्त्रीय अध्ययन

प्रगति दूबे
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

गत कुछ दशकों में यह देखा गया है कि सूचना तकनीकी के विस्तार ने सम्पूर्ण विश्व के लोगों के बीच सम्पर्क की नई–नई संभावनाओं को उपलब्ध कराया है। सूचना प्रवाह की तेजी ने लोगों के दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले कारक भी बदल दिये हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे मोबाइल क्रान्ति ने आम आदमी के साथ–साथ ग्रामीण परिदृश्य में बहुत अधिक बदलाव ला दिया है। वास्तव में मोबाइल हमारे सामाजिक, आर्थिक जीवन का अहम् हिस्सा बन गया हैं। और इसने हमारे सोचने, काम करने, प्रतिक्रिया व्यक्त करने, बातचीत करने और जीवन शैली में बहुत अधिक परिवर्तन किया है। अब तो मोबाइल के बिना जीवन की कल्पना करना भी कठिन सा हो गया है।

मनुष्य प्रारम्भ से ही सूचना प्राप्ति एवं उसके प्रेषण के लिए नाना प्रकार से क्रियाशील रहा है क्योंकि हर व्यक्ति के लिए सूचना का अपना महत्व है। संचार व्यक्ति या समूह के साथ स्थापित होता है, इसी से जुड़े जन संचार का सम्बन्ध अपनी जन–सम्प्रेषणीयता को जनसमूह तक पहुँचाना है।

आज का युग वैज्ञानिक युग है। एक राष्ट्र के सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए दूरसंचार, एवं मोबाइल सेवाओं को विश्व भर में एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में मान्यता दी गई है। भारत गाँवो का देश है जिसकी 70 प्रतिशत जनसंख्या गाँवो में निवास करती है, जिसका मुख्य व्यवसाय कृषि है। कृषि प्रधान देश होने के कारण आज गाँव से शहरों का सीधा सम्पर्क न होना विकास में बाधक बन रहा है किन्तु मोबाइल क्रान्ति ने सम्पूर्ण विश्व को एक साथ जोड़ दिया है। आज प्रत्येक योजना, जानकारी, घटना, शासकीय नीतियाँ, सूचना सीधे मोबाइल के माध्यम से प्रत्येक गाँव में प्रत्येक व्यक्ति से जुड़ी हुई है। आज मोबाइल फोन के माध्यम से इंटरनेट, कम्प्यूटर, बैंक की कार्यप्रणाली, किसानों से जुड़ी योजनाएँ ई–मेल, एस.एम. एस आदि प्रत्येक कार्य मोबाइल के माध्यम से किए जा रहे है। अब तो हर घर में मोबाइल उपलब्ध है, देश के हर गाँव को दूरसंचार एवं सूचना प्रोद्यौगिकी से जोड़ने की दिशा में प्रयत्न किये जा रहे एवं लगातार उसमें कामयाबी मिल रही है। पिछले लगभग तीस वर्षो में सेटेलाइट संचार व्यवस्था का विकास इस भाँति हुआ है कि दुनिया भर के लोग एक–दूसरे के साथ आराम से सम्पर्क कर सकते हैं। इन सब प्रक्रियाओं को जो दुनिया भर के सामाजिक सम्बन्धो को गहरा और घनिष्ट कर रही हैं इस प्रक्रिया को समाजशास्त्री वैश्वीकरण कहते हैं।[2] भूमण्डलीकरण के इस दौर में सूचनाओं का आदान–प्रदान तेजी से हो रहा है। इस बदलाव की तुलना हम वैश्विक गाँव से करते है। आज पूरा विश्व एक गाँव की भांति एक दूसरे के अत्यधिक निकट आ रहा है, जहाँ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं हैं। तेजी से बढ़ती ये नजदीकियाँ सूचनाओं के सम्प्रेषण की तीव्रता से लाभान्वित होकर विकास को प्राप्त कर रही है। सूचना क्रान्ति के इस युग में यह जरूरी हो गया है कि उन वंचित लोगों को इसके दायरे में लाया जाए जो संचार साधनों के अभाव के कारण पिछड़े रहे है। सूचनाएँ मानव जीवन में निर्देशन और परामर्श का काम करती है तथा सर्वांगीण विकास के लिए लक्ष्य और कार्यक्रम का सृजन करती है। एक सही सूचना मानव जीवन को बदलने और विकसित करने की क्षमता रखती है।

21 वीं शताब्दी के अंत तक पूरी दुनिया संचार क्रान्ति के दौर में प्रवेश कर गई हैं। संचार के विभिन्न साधनों के कारण दूरदराज गाँव में बैठा हुआ व्यक्ति दुनिया में हर जगह पहुँच गया है। हालाँकि ऊपरी तौर पर तो यह केवल हालचाल जानने का साधन मालूम पड़ता है, परन्तु वास्तविकता इसके ठीक विपरीत है। संचार क्रान्ति के इस युग में वैश्विक स्तर पर सामाजिक सम्पर्कों को जोड़ने या अपनी बात को तत्काल दूसरों तक पहुँचानें में सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स का कोई विकल्प नहीं है। ये साइट्स संदेशों के आदान–प्रदान का त्वरित व सुगम माध्यम बन चुकी है। यही कारण है कि इनका चलन तेजी से बढ़ रहा है। खासतौर पर युवा वर्ग तो इनका दीवाना है। इन्टरनेट संवाद और जानकारियों का अभाह भण्डार है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने न सिर्फ राष्ट्रीय स्तर पर, बल्कि वैश्विक स्तर पर अभिव्यक्ति को नया आयाम दिए है।

जहाँ तक ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल फोन की पहुँच का प्रश्न है तो देश के ग्रामीण इलाकों में मोबाइल एवं इन्टरनेट उपभोक्ताओं की संख्या 35 करोड़ के पार पहुँच गई है। सेल्यूलर मोबाइल ऑपरेटरों के संगठन ;ब्ण्व्।ण्ण्म्द्ध के अनुसार ग्रामीण इलाकों में मोबाइल ग्राहकों की संख्या 36.9 लाख से बढ़कर 35 करोड़ 1 लाख तक पहुँच गयी है।

बालेंदु दाधीच (साइबर एक्टपर्ट) का मानना है कि किशोरावस्था उम्र का वह पड़ाव है जब बच्चों में कई प्रकार के शारीरिक बदलाव होते है। वे दूसरों में भावनात्मक लगाव तलाशते है। सोशल मीडिया उन्हें एक ऐसा मंच दे रहा है, जहाँ वे नये मित्र बनाते है उनसे बेझिझक बाते करते है जो बच्चे थोड़े शर्मीलें प्रवृत्ति के होते है, वास्तविक जीवन में आमने–सामने बात व्यवहार करने में संकोच करते है ऐसे बच्चें सोशल मीडिया पर अपनी भावनाएँ निर्वाध रुप से अभिव्यक्त कर पाते है। इस तरह आभासी दुनिया ही उनका समाज बन जाता है तथा वे अपना अधिक से अधिक समय वहां बितानें लगते है इसके अतिरिक्त कुछ क्षणों में पहचान स्थापित करने का यह सबसे सरल माध्यम है।

किशोरों को लगता है कि वर्चुअल दुनिया में सक्रिय रहने से एक सेलेब्रिटी स्टेट्स मिल जाता है। सोशल मीडिया जिसका मोबाइल सबसे महत्वपूर्ण अंग है, की पहुँच बढ़ने से कई सकारात्मक बदलाव आया है, लेकिन इसका गलत प्रयोग विपरीत परिणाम देता है।

इसके प्रयोग से परिवारिक मूल्यों मे भी व्यापक परिवर्तन आया है, आमने–सामने की बातचीत कम हुयी है। परिवार के बुजुर्ग सदस्य कहीं न कहीं उपेक्षा का शिकार हो रहे है, यदि प्रचीन समय से वर्तमान समय की तुलना करे तो इन दो दशकों में इसके परिणाम चौकाने वाला है। तनाव, अवसाद जैसी समस्याएँ न केवल बुजुर्ग सदस्यों को प्रभावित कर रहा है, बल्कि युवा वर्ग भी इसकी चपेट में आ रहा है।

जानकारों की माने तो कई बार बच्चें अपना तनाव या अकेलापन दूर करने के लिए मोबाइल फोन पर निर्भर हो जाते है । कुछ संकोची बच्चें, किशोर, युवा आमने–सामने की तुलना में आभासी दुनिया में खुलकर बातें करते है।

समाजशास्त्रीय अध्ययनों में यह बात सामनें आ रही है कि, इससे बच्चों का सामाजिक दायरा बढ़ नहीं पाता और एक वक्त के बाद वे अकेलापन महसूस करने लगते है। वे इस प्रकार अवसाद का शिकार हो रहे है किशोरावस्था या युवावस्था जो सम्पूर्ण जीवन की आधारशिला हैं यदि वही अवसादग्रस्त हो जाएँ जो देश का भविष्य किस ओर जा रहा यह विचारणीय प्रश्न है यह है तो एक छोटी सी घटना परन्तु इसका प्रभाव चौंकाने वाला है। प्राचीन पुराणों धर्म ग्रन्थों, रामायण–महाभारत इत्यादि ग्रन्थों में प्रातः काल माता–पिता का चरण स्पर्श करना दिनचर्या का आवश्यक अंग था परन्तु वर्तमान समय में इन नैतिक मूल्यों के स्थान पर प्रातः उठकर मोबाइल पर आने वाले संदेशों को पढ़ना या उन्हें देखना दिनचर्या का आवश्यक अंग बन गया इसी तथ्य से यह बात स्पष्ट हो जाती है की वर्तमान युवा पीढ़ी किस ओर जा रही है, अर्थात दिनचर्या में आने वाले इस छोटे से बदलाव ने मान्यताओं को बदल कर रख दिया है जिसकी ओर हमारा ध्यान ही नहीं है। ग्रामीण क्षेत्र भी इससे अछुता नहीं है, वहीं जहाँ एक ओर विकास की गति ने गाँव की सूरत को बदल दिया है, वहीं शहरीकरण के इस दौर ने शहरी मान्यताओं को गाँवो तक पहुँचा दिया है।

ग्रामीण भारत में अब तक जो भी नगरीकरण हुआ है, वह नगरों के प्रभाव के कारण नहीं है बल्कि इससे विकास की अन्य दूसरी प्रक्रियाओं जैसे शिक्षा, आधुनिकीकरण, यातायात, टेलीफोन और इण्टरनेट आदि का योगदान है। ग्रामीण क्षेत्रों के नगरीकरण में वास्तविक योगदान गाँव नगर गठजोड़ का है जो कि देश में आजकल जोर पकड़ रहा है।

हमारे आस–पास की दुनिया मे तेजी से बदलाव आया है । अमूमन इसका अनुभव हमें तब होता है जब हम किसी गाँव में जाते है। आज ग्रामीण इलाकों में विकास का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है संचार क्रांन्ति। वास्तव में संचार क्रान्ति के माध्यम से किसी भी गाँव की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है। ग्रामीण विकास में सूचना–संचार तकनीकी के महत्व का अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि यहाँ मिट्टी के घरों मे भी मोबाइल की घटियाँ बजती है ।

यदि समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण परिवारिक संरचना पर मोबाइल फोन के प्रभाव की चर्चा करें, तो यह स्पष्ट होता है कि, जहाँ एक ओर मोबाइल फोन ने परिवार में सदस्यों के मध्य दूरियों को समाप्त किया है, वही कई प्रकार की समस्या से हमें रूबरू कराया। दादी–नानी की कहानियाँ एवं गीत जहाँ परिवार में मनोंरजन का प्रमुख साधन थे उसकी जगह आज मोबाइल फोन पर बजनेवाले गीतों ने ले ली। अपने ही परिवार के सदस्यों के मध्य हम अपने लिए व्यक्तिगत स्पेस तलाशते है। आमने–सामने वार्तालाप करने के स्थान पर मोबाइल फोन पर अपरिचित लोगों एवं संसार के साथ विचरण करते है।

विलियम जे0 गूड ने लगभग पचास वर्षो तक अफ्रीका, मध्य एशिया चीन, भारत, जापान जैसे देशों के परिवारों का अध्ययन किया और अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि कृषि प्रधान समाज में परिवार एक आर्थिक इकाई के रुप में काम करता है। परिवार का स्वरुप साधरणतया सत्तावादी स्थिर एवं विस्तृत होता है। लेकिन आज वैसे परिवार में भी परिवर्तन हो रहा है विस्तृत परिवार धीरे–धीरे दाम्पत्य परिवार में बदलते जा रहे है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि मोबाइल फोन वर्तमान समय में अनेक प्रकार से लाभकारी हैं। सुरक्षा की दृष्टि से विशेषकर महिलाओं के लिए यह बहुत उपयोगी हैं। हमें मोबाइल फोन के माध्यम से अपने परिवार के सदस्यों के विषय में पल–पल की जानकारी मिलती है। दूर बैठे परिवार के सदस्यों से विडियो–कान्फ्रेसिंग के जरिए ऐसे बात होती है, जैसे बस वो हमारे पास ही है, सीमाओं को तोड़कर शहर एवं गाँव के भेद को मिटाकर मोबाइल फोन नें हमें जीवन जीने की एक नयी शैली से परिचित कराया है। आज परिवार के हर सदस्य एक दूसरे से जुड़े हुए अनुभव करते है एवं अपनी जीवन–शैली की चहल पहल से दूर बैठे सदस्य को अवगत कराते है। महिलाएँ स्वयं को अधिक स्वतंत्र एवं सहज अनुभव करती है। पढ़ी लिखी महिलाएँ अपने घरेलू कामकाजों में से समय बचाकर मोबाइल पर उपलब्ध इन्टरनेट का प्रयोग अपने ज्ञानार्जन करने के लिए करती है परन्तु यह तस्वीर का केवल एक पहलू है।

परिवार की संरचना और प्रकार्य में तेजी से बदलाव आ रहे है। पाश्चात्य देशों के विषय में एक प्रश्न उठ खड़ा हो गया हैं कि क्या परिवार का भविष्य लुप्त हो जाएगा? उभरते तथ्यों को देखने से ऐसा लगता है कि परम्परागत मूल परिवार का भविष्य खतरे में हैं। इन सब के बीच कई सारे अध्ययनों में यह तथ्य सामने आया है कि मोबाइल पर महिलाओं द्वारा की जाने वाली घण्टों की बातचीत कहीं न कहीं परिवारिक मूल्यों को प्रभावित करती है। वे अपने परिवार को पर्याप्त समय नहीं दे पाती इससे इनका परिवार टूट रहा है। बुजुर्ग सदस्य जो ज्ञान एवं अनुभव का स्त्रोत कहे जाते थे आज मोबाइल फोन ने एक नये संसार से परिचित कराया है। परिवार के बुजुर्ग सदस्य केवल वे बातें बताते थे जो आवश्यक एवं जानने योग्य थी परन्तु इस नये संसार में सब कुछ खुला हुआ है, विचार भी एवं भावनाएँ भी। जहाँ कोई रोक–टोक नहीं, सीमा नहीं है, न कोई सही–गलत बताने वाला, ना समझाने वाला ?

परन्तु अपरिपक्व मस्तिष्क इस खुलेपन को एक नये दृष्टिकोण से देखता है। इस खुलेपन ने व्यक्ति को उग्र एवं उतावला बना दिया है। व्यक्ति को विचारों की अभिव्यक्ति की इतनी जल्दी है कि वह समय एवं सीमाओं की उपेक्षा करता है।

विशेषकर परिवार के युवा सदस्य, बच्चों एवं महिलाओं पर इसका व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है। युवा सदस्य जिनकी एक नयी एवं अलग सोच है, वे संसार को नए दृष्टि से देखते है। वे इंटरनेट से जुड़े अपने मित्रों के साथ एक आभासी संसार में विचरण करते है और वास्तविकता में वही संसार तलाश करते हैं और ऐसा नहीं मिलने पर अवसाद एवं तनाव का शिकार होते है। यह सत्य है कि मोबाइल फोन सूचना एवं ज्ञान का अथाह भण्डार है, परन्तु सूचना व ज्ञान सही समय एवं मात्रा में मिले तो यह औषधि का काम करती है, एवं चरित्र का निर्माण करती हैं नही ंतो व्यक्तित्व की आधारशिला को क्षति पहुँचाती है।

वर्तमान में जहाँ विवाह की आयु बढ़ रही है और दूसरी ओर विद्यालयों में लड़के–लड़कियों को एक दूसरे से सम्पर्क में आने का अवसर प्राप्त हुआ है परन्तु अपने मनचाहे लड़के से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पाने के कारण आज अनेक लड़कियों में निराशा पायी जाती है।

एक अध्ययन के अनुसार मोबाइल फोन ने महिलाओं पर होने वाले अत्याचार एवं हिंसा को बढ़ा दिया है, अर्थात मोबाइल फोन के नकरात्मक प्रभाव भी हैं, जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है। माता–पिता मोबाइल फोन में इतने व्यस्त हैं कि वे अपने बच्चों को पर्याप्त समय नहीं पाते जिससे कहीं न कहीं उनमें भावनात्मक लगाव कम हुआ हैं। आज बच्चें माता–पिता से अधिक अपने दोस्तों को अपनी समस्याओं को अवगत कराते हैं एवं उनसे बातचीत में सहज अनुभव करते है।

इन सब के अतिरिक्त मोबाइल फोन के बहुत सारे सकारात्मक प्रभाव भी है जिसकी अवहेलना नहीं की जा सकती है। आधुनिक विश्व से परिचित कराने में मोबाइल फोन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इसमें कोई सन्देह नहीं हैं कि, यदि आज हम विकास के मार्ग पर परस्पर दौड़ रहे है तो उसके कई महत्वपूर्ण करकों में संचार प्रौद्योगिकी भी एक महत्वपूर्ण कारक है जिसे स्वरूप प्रदान करने में मोबाइल फोन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

परन्तु यह तस्वीर का केवल एक पहलू हैं। तस्वीर का दूसरा पहलू ये है कि भारत की अधिकांश ग्रामीण आबादी की पहुँच से ऐसे माध्यम दूर हैं। कालांतर में भी सरकार इस खाई को पाटने का प्रयास करती रही है, लेकिन इस दिशा में वर्तमान सरकार के प्रयास विशेष रूप से चर्चा का विषय बने हुए हैं। ''डिजिटल इण्डिया'' की संकल्पना और उसका लक्ष्य इन्ही प्रयासों का प्रस्थान बिन्दु है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी मानते थे कि भारत गाँवो मे बसता है और जब तक ये विकसित नहीं होंगे, देश का समावेशी विकास नहीं होगा। सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम् शस्य श्यामलाम् मातरम् कह कर बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने जो तस्वीर लोगों के दिलों–दिमाग में उकरने का प्रयत्न किया था वह भी भारत के ग्रामीण स्वरूप को ही प्रदर्शित करती है। हालाँकि महात्मा गाँधी के स्वप्न और साहित्यिक उपमाओं से इतर तथ्य अब से कुछ साल पहले तक यह रहा हैं कि शहर स्मार्ट होते जा रहे हैं और गाँव विकास की अपेक्षा, उपेक्षा के शिकार हो रहे हैं। नगरों में सुविधाओं के प्रसार पर ज्यादा ध्यान दिया गया जबकि गाँव लगातार पिछड़तें जा रहे है। यहीं कारण है कि लगातार लोग गाँवो से शहरों की ओर पलायन करते है और शहरी जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है ।

पर यह भी वास्तविकता है कि वर्तमान में गाँवो का विकास तेजी से हो रहा है, गाँवो में बिजली, पानी, संचार की सुविधाएँ तेजी से फैल रही है कृषि क्षेत्र में सुधार हुआ है, शिक्षा व्यवस्था अधिक सृदृढ़ हो रही है स्वास्थ्य सेवाओं संचार सेवाओं ने ग्राम व नगरीय भेद को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है, सड़कों के विस्तार ने गाँव व शहर की दूरी को कम करने का प्रयास किया है। यातायात एवं संचार के माध्यमों में हुए क्रान्तिकारी परिवर्तन नें भी हमारे भौतिक पर्यावरण में अत्यधिक बदलाव ला दिया है। इसका मुख्य श्रेय समाज में निरन्तर होते प्रौद्योगिक परिवर्तन को हैं। इससे समय व दूरी पर मानव ने अपना नियंत्रण बना लिया है। फलस्वरुप भिन्न–भिन्न संस्कृतियों के बीच आदान–प्रदान की प्रक्रिया बढ़ी है।

भारत में कृषि के क्षेत्र में हरितक्रांन्ति के जन्मदाता माने जाने वाले चर्चित वैज्ञानिक एम0एस0 स्वामीनाथन ने एक बार कहा था कि सूचना तकनीक के क्षेत्र में होने वाला प्रयत्न भारत में सदाबहार क्रान्ति लाएँगी और इससे पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना उत्पादकता बढ़ेगी। उस समय भी हरितक्रान्ति के तकनीकी ज्ञान के विस्तार में सबसे सशक्त संचार प्रणाली आकाशवाणी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी।

आज बात आकाशवाणी से आगे की ओर जाने की है। आज गाँवो में भी बड़ी आबादी के हाथों में इंटरनेट से लैस मोबाइल है। इसका घनत्व बढ़ानें के प्रयत्न किये रहे है। देश में करीब 5 लाख गाँवों में टेलीफोन का नेटवर्क है। भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) के आँकड़ों के अनुसार 30 जून 2015 तक भारत में एक अरब से ज्यादा फोन (लैंडलाइन और मोबाइल) उपभोक्ता बन चुकें थे। इनमें से ग्रामीण क्षेत्र के करीब 42 करोड़ उपभोक्ता थे और 58 करोड़ से ज्यादा उपभोक्ता शहरी क्षेत्र के थे।

इंटरनेट एवं मोबाइल एसोशिएसन ऑफ इंडिया (आई0ए0एम0 ए0आई0) ने गत वर्ष नवम्बर में अपने आकलन में कहा था कि दिसम्बर .2015 तक भारत में इंटरनेट का इस्तेमाल करने वाले व्यक्तियों की संख्या 40 करोड़ से ज्यादा हो चुकी होगी। इसी रिपोर्ट में कहा गया था कि ग्रामीण भारत में इंटरनेट इस्तेमाल करने वाले व्यक्तियों की संख्या दिसम्बर में पौने बारह करोड़ होगी। 40 करोड़ इंटरनेट उपभोक्ताओं मे से 30 करोड़ तो मोबाइल पर सर्फिंग करते है। यह है नये भारत की नयी तस्वीर यदि इन सभी घटनाओं का सामाजिक अध्ययन करें तो पायेगें की ग्रामीण क्षेत्रों के युवा अब संचार माध्यमों से अपडेट होकर नए भारत के करवट लेने का संकेत देने लगे ळें

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **शर्मा,के0एल0 : समकालीन समाजशास्त्रीय सिद्वान्त'',** राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ आकादमी, जयपुर 2008
2. **हसनैन, नदीम : ''समकालीन भारतीय समाज'',** भारत बुक सेन्टर, लखनऊ ।
3. **सिंह, शिवबहाल : विकास का समाजशास्त्र''** रावत पब्लिकेशन्स, जवाहर नगर, जयपुर, 2010 ।
4. **आहूजा राम : ''भारतीय सामाजिक व्यवस्था' :** रावत पब्लिकेशन्स जवाहर नगर, जयपुर, 2008
5. **डॉ0 सिंह जे0 पी0 : ''समाजशास्त्र अवधारणाएँ एवं सिद्वान्त'',** मैरिज हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, 2006
6. **गुप्ता, मोतीलाल : ''भारत में समाज''** राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2009

पत्रिकाएँ

1. **डॉ0, गौतम, नीरज कुमार : ''मोबाइल क्रान्ति में दी ग्रामीण विकास को नई दिशा''**, कुरुक्षेत्र, फरवरी, 2016।
2. **जोशी, हेमन्त : ''सामाजिक बदलाव में सामुदायिक रेडियो, मोबाइल और इंटरनेट** कुरुक्षेत्र, दिसम्बर, 2015
3. **ओझा, प्रभांशु : इलेक्ट्रानिक मीडिया और गाँवो का बदलता चेहरा'',** कुरुक्षेत्र, फरवरी 2016।
4. **झा, प्रकाश : ''परिवहन और संचार सुविधाएँ ग्रमीण विकास की धुरी''** कुरुक्षेत्र, फरवरी, 2016।
5. **डॉ0 हक ए0 एम0 : ''ग्रामीण जीवन में विज्ञान तथा तकनीक की बढ़ती भूमिका''** कुरुक्षेत्र, जुलाई, 2016।
6. **दाधीच, शर्मा बालेन्दु : ''रफ्तार पकड़ रहा है डिजिटल आधारभूत ढांचे का विकास'',** कुरुक्षेत्र, दिसम्बर 2016।